I
कोड

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल वर्ष 2018 24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिंदी विशिष्ट	0 0 1	हिंदी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

0552054

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2	8	1	6	3	2	8	9	0

में

दो	आठ	एक	छः	तीन	दो	आठ	नौ	शून्य

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र. भोपाल

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

क :— पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 1 शब्दों में एक

ख :— परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 02

ग :— परीक्षा का दिनांक 01 03 2018

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

केन्द्र क्रमांक 162001

हायर सेकेंडरी परीक्षा

केन्द्राध्यक्ष
सी.टी.पी. उ.मा. विद्यालय
शिवपुरी (म.प्र.)

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर: Smt Rani Nadeem, 01.3.18

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

A.K. Rathore (Lecturer)
Govt. B.H.S.S. Shahpur
V.No. 7703
Mob. 9425663959

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

Smt. Malti Choudhary (V.A)
Govt. H.S.S. Nahiya
Reg No. 7685
Mob. 942

~~W.B. Gadve~~
~~Govt. H.S.S. De~~
~~V.No. 785~~
~~Mob. 9425658~~

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

3

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 3 के अंक	=	कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ 1

(अ) कृष्ण को लेने के लिए।
(ब) भय में।
(स) लालमणि।
(द) पंत।
(इ) वर्षा।

उत्तर ⇒ 2

(अ) धरती।
(ब) क्षणभंगुर।
(स) अरबवें।
(द) मातृभाषा।
(इ) प्रबंध काव्य।

उत्तर ⇒ 3

(1) असत्य।
(2) असत्य
(3) सत्य।
(4) असत्य।
(5) सत्य।

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ 4

(अ) गजमुख का मुख दशमुख (रावण) देखता है।

(ब) रामनारायण उपाध्याय को लिखने के लिए एकान्त चाहिए।

(स) डा. रामकुमार वर्मा की माताजी का नाम राजरानी देवी था।

(द) रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते है।

(ई) रोला और उल्लाला के संयोग से छप्पय छंद बनता है।

B
S
E

उत्तर ⇒ 5

(अ) मीरा के आराध्य ⇒ श्रीकृष्ण
(ब) वापसी ⇒ ऊषा प्रियंवदा
(स) कंस आतंकित था ⇒ देवकी का व्योमातीत रूप
(द) गेय मुक्तक ⇒ ~~मीरा पदावली~~ केशवदास
(ई) माता - पिता ⇒ द्वन्द्व समास

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ 6

नाव में पानी भर जाने पर सयानों का कर्त्तव्य है कि वे उस पानी को बाहर निकालें और अपनी नाव को डूबने से बचाएं।

उत्तर ⇒ 7

'पल्लव वसना' उस सूखी सी डाल को कहा गया जो वसंत के अभाव में अर्थात पतझड़ ऋतु में सूख गई है। वह वसंत के आने पर ही पल्लवों के वस्त्रधारिणी बनेगी। पल्लव वसना उस शैलपुत्री के समान ही है।

उत्तर ⇒ 8

'अरी सुहागिन' सम्बोधन वैसे तो विवाहित स्त्री के लिए आया है लेकिन प्रकृति की ओर भी संकेत दिया गया है।

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCA

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ 9

माँ सरस्वती की वन्दना देवगण, ऋषिगण, श्रेष्ठ तपस्वी, भूत और भविष्य को जानने वाले उनके पति ब्रम्हा जी, शंकरजी और कार्तिकेय करते हैं।

उत्तर ⇒ 10 (OR)

जब युवक साहस के साथ अपने प्रगति मार्ग (पथ) पर आगे बढ़ता है तो विघ्न - बाधायें सहम कर मार्ग छोड़ देती है।

उत्तर ⇒ 11

'नये मेहमान' एकांकी में लेखक ने महानगरों के मध्यमवर्गीय समाज की आवास समस्या को ~~पेश~~ व्यंग - विनोद एवं सरल - सुबोध से किया है। महानगरों में आवास की समस्या गम्भीर है। हारी - बिमारी इत्यादि समस्याओं से आज के मध्यवर्गीय परिवार को जूझना पड़ता है। इन समस्याओं के साथ पड़ोसियों के साथ ताल - मेल बैठाना अच्छी खासी चिन्ता व चर्चा का विषय है।

7 योग पृष्ठ + पृष्ठ के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ 12

भय और आशंका मे सूक्ष्म अंतर है। भय मे आने वाली दुख या आपत्ति के कारण एक प्रकार का आवेगपूर्ण और स्तंभकारक मनोभाव उत्पन्न होता है भय कहलाता है। भय मे दुख के बाहर जाने की आकुलता होती है।

'आशंका' मे आने वाली मुसीबत का निश्चय न होने पर मात्र उसकी संभावना होती है तब जो आवेगशून्य भय ही आशंका कहलाती है। आशंका को भय का 'लघुरूप' माना जाता है।

उत्तर ⇒ 13

शरद जोशी के अनुसार अच्छे अध्यक्ष की विशेषताएं निम्न है।

(1) अच्छा 'अध्यक्ष' रेडीमेड होता है वह सब 'विषय पर एक सा बोलता है और सब मे एक सा आनन्द आता है।

(2) अच्छा अध्यक्ष' देर से आता है।

(3) अच्छा 'अध्यक्ष' प्रमुख वक्ता से असहमत होते हुए उसकी प्रशंसा करता है।

(4) 'अध्यक्ष' की शेरवानियों मे से एक विशेष प्रकार की गन्ध आती है वह गंध है - अध्यक्षता की गंध।

B S E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ 14 (OR).

नैनो टेक्नोलॉजी के तहत मटेरियल के आकार को छोटा करके उसके द्वारा तैयार मटेरियल नैनो मटेरियल कहलाता है। इस टेक्नोलॉजी के कारण मटेरियल के गुण इलेक्ट्रिकल, थर्मल, ऑप्टिकल और मेकेनिकल इत्यादि हर स्तर पर बदलने लगते हैं और अच्छे आश्चर्यजनक परिणाम देते हैं।

उत्तर ⇒ 15

शुद्ध वाक्य -

(i) उसने मुझसे कुछ नहीं कहा।

(2) भवदीय।

उत्तर ⇒ 16

हास्य रस ⇒ "काव्य में किसी विचित्र वेशभूषा, कथन आदि हँसी उत्पन्न करने वाले कार्यों को देखकर हृदय में हास्य "हास" नामक स्थायी भाव जाग्रत होता है, वहाँ हास्य रस की उत्पत्ति होती है"

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

उदाहरण - "मैं महावीर हूँ पापड़ को तोड़ सकता हूँ। गुस्सा आ जाये तो, कागज को मरोड़ सकता हूँ"।।

उत्तर ⇒ 17

लेखिका के घर गौरा के आने से पूर्व घर के लिए दूध ग्वाले द्वारा ही विक्रय किया जाता था परन्तु 'गौरा' के दूध देना प्रारम्भ कर देने से उसकी बिक्री रुक गई। अतः ग्वाले ने द्वेषवश 'गौरा' को भोजन के दौरान गुड़ में लपेटकर सुई खिला दी।

उत्तर ⇒ 18 (OR)

राजभाषा ⇒

जहाँ राष्ट्रभाषा अन्य भाषा-भाषी राज्यों के बीच सेतु का काम करती है, वहीं राजभाषा राज्य के प्रशासनिक काम-काज की भाषा है। राजभाषा अधिनियम के अनुसार क्षेत्रीय भाषा के साथ-साथ हिंदी में अनुवाद स्वीकार होता है। जब कोई भाषा राजभाषा का दर्जा प्राप्त कर लेती है तो इसका महत्व और बढ़ जाता है। प्रशासनिक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र. सेवा में राजभाषा का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।

विशेषताएं ⇒

(1) राजभाषा किसी राज्य की प्रशासनिक काम-काज की भाषा होती है।

(2) राजभाषा का क्षेत्र राज्य तक ही सीमित रहता है।

B
S
E

उत्तर ⇒ 19 (OR)

यमक अलंकार ⇒ यमक का अर्थ है दो। अतः जब एक ही शब्द की भिन्न अर्थ में आवृत्ति होती है तो वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरण "कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय,
या पाये बौराते नर वा खाये बौराय" ॥

श्लेष अलंकार ⇒ श्लेष का अर्थ है चिपकना। काव्य में जहाँ एक शब्द के एक से अधिक अर्थ निकलते है वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण -
"रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरे, मोती मानस चून" ॥

11

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 11 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ २०

रिपोर्ताज ⇒

"रिपोर्ताज शब्द अंग्रेजी के 'रिपोर्ट' शब्द से बना हुआ है जिसका अर्थ होता है किसी घटना, व्यक्ति अथवा वस्तु का आँखों देखा या कानों सुना वर्णन करना" रिपोर्ताज में तथ्य की कलात्मकता पर ध्यान नहीं दिया जाता है बल्कि विवरण पर ध्यान दिया जाता है।

विशेषताएँ ⇒

① रिपोर्ताज में किसी विषय, व्यक्ति वस्तु का बड़े रोचक ढंग से वर्णन किया जाता है।

② रिपोर्ताज में अतीत का परिवेश होता है।

③ रिपोर्ताज में कलात्मकता पर ध्यान नहीं दिया जाता बल्कि घटना के विवरण पर ध्यान दिया जाता है।

12

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 12 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ 21

प्रयोगवाद की प्रमुख विशेषताऐं निम्न है।

(1.) नवीन उपमानो का प्रयोग – प्रयोगवादी कवियो ने पुराने एवं प्रचलित उपमानों के स्थान पर नवीन उपमानो का प्रयोग किया है वे मानते कि काव्य के पुराने उपमान अब बासी पड़ गए है।

(2) प्रेम भावनाओ का खुला चित्रण ⇒ इन्होने प्रेम भावनाओ का अत्यंत खुला चित्रण कर 'अश्लीलता' का समावेश कर दिया है।

(3) बुद्धिवाद की प्रधानता ⇒ प्रयोगवादी कवियों ने बुद्धि तत्व को अधिक प्रधानता दी है इसके कारण काव्य मे कही कहीं दुरुहता आ गई है।

प्रमुख कवि	रचनाऐं
(1) अज्ञेय	हरी घास पर क्षण भर
(2) मुक्तिबोध	भूरी - भूरी खाक धूल
(3) नरेश मेहता	संशये की एक रात
(4) धर्मवीर भारती	अंधायुग , कनुप्रिया

13

योग पूर्व पृष्ठ	पृष्ठ 13 के अंक	कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ 22

सूरदास

(अ) दो रचनायें ⇒ (1) सूरसागर (2) सूरसारावली
(3) साहित्य लहरी

भावपक्ष -

भक्ति भाव ⇒ सूरदास कृष्ण भक्त थे। काव्य ही उनका भगवत भजन था। एक भक्त हृदय की अभिव्यक्ति उनके काव्य में सहज ही दिखाई पड़ती है। उनकी भक्ति सखा भाव की थी। कृष्ण को सखा मानकर उनकी बाल - लीलाओं और प्रेम लीलाओं का अद्भुत वर्णन किया है।

रस संयोजन ⇒ रसों की उत्कृष्ट रस संयोजना के आधार पर श्यामसुन्दर दास ने उन्हें 'रससिद्ध' कवि कहकर पुकारा है। उन्हे काव्य में वात्सल्य रस का प्रमुख से वर्णन किया है।

अद्वितीय वात्सल्य ⇒ सूरदास ने कृष्ण के बाल - चरित्र शरीर सौंदर्य और माता पिता के हृदयस्पर्शी अंश का जैसा अनूठा, मनोवैज्ञानिक एवं सरस वर्णन किया है वैसा वर्णन सम्पूर्ण विश्व के साहित्य में दुर्लभ है। सूरदास जी वात्सल्य के सर्वश्रेष्ठ कवि है।

(14) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 14 के अंक — कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

कलापक्ष –

भाषा ⇒ सूरदास जी ने जनमानस में प्रचलित ब्रज भाषा को अपनाया है। इनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव दोनों रूप देखने को मिलते है। लोकोक्तियों एवं मुहावरो के प्रयोग से इनकी भाषा में चार चाँद लग गए है।

शैली ⇒ सूरदास जी ने मुक्तक काव्य शैली में अपने गीतो (काव्यो) की रचना की है। गीतो की दृष्टि से पद शैली को अपनाया है।

अलंकार योजना ⇒ सूरदास जी के काव्य में अलंकारों का स्वाभाविक रूप से वर्णन हुआ है। अलंकारों में मुख्यतः उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा अनुप्रास, यमक श्लेष आदि अलंकारो का प्रयोग देखने को मिलता है।

साहित्य में स्थान ⇒ सूरदास जी का अष्टछाप के ब्रजभाषा कवियों में सर्वोत्कृष्ट स्थान है। सूरदास जी का बाल प्रकृति चित्रण, वात्सल्य तथा श्रृंगार का वर्णन अद्वितीय है। सूरदास जी को हिन्दी साहित्य आकाश का सूर्य कहा जाता है। सूरदास जी के काव्य में वात्सल्य का सुंदर वर्णन हुआ है इसलिए वे वात्सल्य रस के सम्राट माने जाते है। इनकी कुछ रचनाऐ विश्व साहित्य की धरोहर है।

B
S
E

15

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 15 के अंक	=	कुल अंक

EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADH

क्र.

उत्तर ⇒ 23

उषा प्रियवंदा

रचनाऐं ⇒ (1) जिन्दगी और गुलाब (2) फिर बसन्त आया
(3) पचपन खम्बे लाल दीवारे

भाषा - शैली -

भाषा - उषा प्रियवंदा जी की भाषाओ की अपनी एक विशेषता है इनकी रचनाओं मे प्रसंग के अनुकूल उपयुक्त सही शब्दो का प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियो एवं मुहावरो के प्रयोग से इनकी भाषा मे चार चाँद लग गए है।

शैली - उषा प्रियवंदा जी की रचनाओं मे निम्न शैलियो का प्रयोग हुआ है।

(1) गवेषणात्मक शैली - इस शैली का प्रयोग इन्होने सांस्कृतिक निबन्धो मे किया है।

(2) आलोचनात्मक - इन्होने हिन्दी साहित्य संबंधी विषयो के विवेचन मे इस शैली का प्रयोग हुआ है।

(3) वर्णनात्मक शैली - प्रियवंदा जी की वर्णनात्मक शैली इतनी स्पष्ट सरल व सुबोध है कि वह मानव मन के सामने एक चित्र सा उपस्थित कर देती है।

16

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 16 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

(4) भावात्मक शैली ⇒ जहाँ प्रियंवदा जी भावों में वह जाती है वहाँ यह शैली दिखाई देती है।

(5) विवरणात्मक शैली ⇒ इस शैली का प्रयोग इन्होंने अपनी रचनाओं में किया है गम्भीर से गम्भीर विषयों को भी इस शैली में सरलता से व्यक्त कर देते।

B
S
E

साहित्य में स्थान ⇒ भाव और कलापक्ष की दृष्टि से ऊषा प्रियंवदा जी का काव्य उच्चकोटि का है। वे एक कहानीकार के रूप में हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य की प्रगति में इनका अतुलनीय योगदान है।

17

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 17 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ २५

संकेत किसी आती ---------- भय कहते है।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'भय' नामक शीर्षक से लिया है इसके लेखक 'रामचन्द्र शुक्ल' जी है।

प्रसंग ⇒ लेखक ने भय को स्पष्ट किया है।

व्याख्या ⇒

भय का शाब्दिक अर्थ है - डर। डर हृदय मे उत्पन्न भय वृत्ति जो आकुलता लाती है। किसी आती हुई आपदा या विपत्ति के आने के दुख के कारण एक विशेष प्रकार का आवेगपूर्ण तथा स्तम्भकारक मनोभाव पैदा होता है, भय कहलाता है। भय मे आकुलता होती है इससे बाहर जाने की।

विशेष ⇒

(1) भय को दर्शाया गया है।
(2) शब्द चयन उत्तम है।
(3) भाषा मे प्रवाह है।
(4) लक्षणा शब्द शक्ति का सुन्दर-सुरूप प्रयोग हुआ है।

18

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 18 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ 25

संकेत - मैया की जोड़ी

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य पुस्तक के वात्सल्य और स्नेह के सूर के बालकृष्ण नामक शीर्षक से लिया गया है इसके कवि सूरदास जी है।

प्रसंग ⇒ यहाँ कृष्ण अपनी माँ से चोटी बढ़ने की शिकायत करते है।

व्याख्या ⇒ कृष्ण कहते है कि हे माता मुझे कितनी ही बार कच्चों दूध पीते हो गई है लेकिन यह चोटी अभी भी छोटी है। तेरे कथानुसार मेरी छोटी बलदाऊ की चोटी के समान लम्बी और मोटी हो जायेगी जो काढ़ते, गुहते में और नहाते सुखाते समय नागिन की तरह लोट जाया करेगी। तू मुझे कच्चा दूध पिलाती है जो पचता नहीं है और मुझे माखन रोटी नही देती है। माताऐं बलाऐं लेने लगीकी हरि और हलधर दोनो भाइयों की जोड़ी चिरंजीव हो।

विशेष ⇒ (1) शिशु के प्रति स्नेह का वर्णन है।

(2) ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

B
S
E

19

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 19 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

[उत्तर → 26]

मनुष्य एक ... परस्पर विश्वास

(क) शीर्षक - मित्रता / मैत्री

(ख) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से अलग उसके अस्तित्व की कल्पना भी नही की जा सकती।

(ग) मित्र एक ऐसा सखा, गुरु तथा माता है जो सबके स्थानों को पूर्ण करता है।

20 | A4ST-16 | + | | = | |
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 20 के अंक | कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर ⇒ 27 (OR)

सेवा में,
जिलाधिकारी महोदय
शिवपुरी (म. प्र.)

विषय ⇒ परीक्षाकाल में ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर प्रतिबंध लगाने हेतु।

महोदय,
विनम्र निवेदन है कि माध्यमिक शिक्षा मण्डल की परीक्षाओं का समय निकट आ रहा है। हम छात्र अपने अध्ययन में व्यस्त है, परन्तु जगह-जगह लाउडस्पीकरो की आवाजो से हमारे अध्ययन में व्यवधान पड़ता है। सभा, धार्मिक कार्यक्रमो और दुकानो पर निर्बाध रूप से लाउडस्पीकर बजाए जा रहे है इससे ध्वनि प्रदूषण तो होता ही है हम एकाग्रचित होकर अपना अध्ययन नहीं कर पाते।

अतः नगर के हजारों छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखकर परीक्षा काल में ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर रोक लगाने का आदेश जारी करें। आपकी अति कृपा होगी।

"धन्यवाद"

भवदीय
अ ब स

दिनांक 01/03/2018

21

योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 21 के अंक	=	कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

उत्तर ⇒ 28

जल का महत्व।

"जल से जीवन, जल ही जीवन जल जीवन का दाता।
जल संरक्षण कर ले मानव, जल भविष्य निर्माता है।"

रूपरेखा -

(1) प्रस्तावना।
(2) जल का महत्व।
(3) जल का विभिन्न क्षेत्रों मे उपयोग
3.1 कृषि कार्यो मे
3.2 उद्योगो मे।
3.3 घरेलू कार्य मे।
3.4 साफ सफाई हेतु।
3.5 पीने हेतु।
(4) जल प्रदूषण की समस्या।
(5) जल प्रदूषण के कारण।
(6) प्रदूषण को रोकने के उपाय।
(7) उपसंहार।

प्रस्तावना ⇒ जल ही जीवन है यह प्राचीन उक्ति है। जल का हमारे जीवन मे अत्याधिक महत्व है। पृथ्वी पर जीवन का विकास जल मे एककोशिकीय जीव के रूप मे हुआ है बाद मे इस एककोशिकीय जीव से मछली केकड़े व अन्य जीवों का विकास हुआ।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(2) जल का महत्व =

जल का महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि रहीमदास जी ने जल के बिना मानव जीवन को सूना कहा है। जल का महत्व इस बात से स्पष्ट है कि मनुष्य भोजन के बिना 7 दिन तक जीवित जीवित रह सकता है जबकि जल के बिना मात्र तीन (3) दिन तक ही। सम्पूर्ण शरीर में 70-71% स्थान जल का ही है।

(3) जल का विभिन्न क्षेत्रों मे उपयोग –

(3.1) कृषि कार्यों में –

कृषि का आधार जल ही है। जल के बिना कृषि नही की जा सकती। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ कृषि का महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय कृषि विश्व की 17.5 % जनसंख्या का पालन करती है। कृषि का आधार जल ही है।

(3.2) घरेलू कार्यों में – घरेलू कार्यों में बर्तन साफ करने खाना पकाने आदि के लिए किया जाता है।

B
S
E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(3.3) उद्योगों में ⇒

जल का उपयोग उद्योगो में किया जाता है। जैसे सूती वस्त्र उद्योग मे रेशो को साफ करने के लिए प्रयोग मे लाना। इसके अतिरिक्त जल विद्युत प्रणाली उद्योगो को सस्ती जल विद्युत उपलब्ध कराती है।

(3.4) साफ सफाई हेतु -

जल का उपयोग विभिन्न स्थानो की साफ - सफाई के लिए किया जाता है इसके अतिरिक्त इसका उपयोग मनोरंजन के क्षेत्र मे भी किया जाता है जैसे वाटर पार्क, वाटर अम्यूजमेंट पार्क इत्यादि।

(3.5) पीने हेतु - जल का सर्वाधिक महत्व इसको पीने के लिए उपयोग मे लाना है। खाना पचाने के लिए जल अति आवश्यक है, यदि खाना पचाने के लिए पर्याप्त मात्रा मे जल नही मिलेगा तो वह रक्त से इसकी आपूर्ति करने लगता है जो बड़ी घातक होती है जिससे लकवा मार जाने व खून के गाढ़ा हो जाने का डर रहता है।

24

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(4) जल प्रदूषण की समस्या - आज विश्व में जल प्रदूषण को अत्यंत गंभीर समस्या विद्यमान है। अनेक देशो विशेषकर विकासशील देशों में स्वच्छ पेयजल की समस्या है इन देशों में 80% से भी अधिक रोग प्रदूषित जल के कारण होते है।

(5) जल प्रदूषण के कारण -
(1). कल कारखानो द्वारा विषैले रसायन नदियों में प्रवाहित किये जाने के कारण।
(2) शहरों में वाहित मल - मूत्र के द्वारा।
(3) पशुओ को जलाशयो में नहलाना।

(6) रोकथाम के उपाय ⇒
(1) कल कारखानो के गंदे जल को शोधित कर नदियो में मिलाया जाये।
(2) लोगों को इसके प्रति जागरूक करें।
(3) शहरो के मल मूत्र को जलाशयो में नही बहाना चाहिए।
(4) पशुओ को सार्वजनिक जलाशयो मे नही नहलाना चाहिए।

B
S
E

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 4 पृष्ठीय वर्ष 20

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
हिन्दी विशिष्ट	0 0 1	हिन्दी	01 03 2018

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक .... पूरक ... पृष्ठांक [ ] + [ ] = [ ]

(7.) उपसंहार ⇒

अन्त में परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि जल का महत्व उसी प्रकार का है जिस प्रकार मानव शरीर में आत्मा का।

जल को प्रदूषण के रोकथाम किया जाना नितान्त आवश्यक है साथ ही कुछ ऐसे तकनीक भी निजात किए जाए ताकि समुद्र के खारे जल को पीने योग्य बनाया जा सके। क्योंकि भूमि जल व धरातलीय जल का स्तर लगातार गिरता ही जा रहा है।

रहीमदास ने कहा है -

"रहीमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरे, मोती मानस चून" ॥

B S E

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर ⇒ 24 का ब

पराधीन सपने सुख नाही

रूपरेखा ⇒
प्रस्तावना ।
(1) परोपकार का अर्थ ।
(2) परोपकार से लाभ ।
(3) परोपकार का महत्व ।
(4) उपसंहार ।
(5)

" परोपकार अथवा

दीपावली

रूपरेखा ⇒
प्रस्तावना ।
(1) दीपावली क्या है ।
(2) दीपावली मनाने का कारण ।
(3) दीपावली का हमारे आदर्शों पर प्र
(4) उपसंहार ।
(5)